संग्रहालय: अर्थ, परिभाषा एवं अवधारणा

Topic-"Museology-Definitions,Typology,Policies–Museum,Museology-Various Theories

Dr. Manoj Kumar

Assistant Professor (Guest)

Dept. of A.I.H.& Archaeology,
Patna University, Patna-800005

P.G./ M.A. IVth Semester ,

Dept. of A.I.H.& Archaeology. Patna University

Paper- Museology (E.C.)

प्राचीन भारत में विविध धर्मो - हिन्दू, बौद्ध एवं जैन के धार्मिक कृत्यों से सम्बन्धित पात्रों, वस्तुओ आदि का दान जन-साधारण द्वारा मन्दिरों मठों आदि को किया जाता था, फलतः उक्त सामग्रिया प्रयुक्त होने और कालान्तर में प्राचीन हो जाने पर उक्त स्थानों - मन्दिरों, मठों एवं विहारों में एक स्थान पर रख दी जाने लगीं और शनैः-शनैः इन वस्तुओ ने संग्रह का रूप प्राप्त कर लिया। संग्रहालय (संग्रह + आलय) उस स्थान विशेष का अव बोधक बना जहां अभूतपूर्व प्राचीन वस्तुओं का संग्रह किया जाता रहा। प्रारम्भ में मन्दिरों, मठों, विहारों एवं मस्जिद को ही संग्रहालय का मुख्य भाग मान लिया जाता रहा क्योंकि इन स्थानों पर दानस्वरूप प्राप्त मूर्तियों एवं अन्य वस्तुओं को सुरक्षित रखा जाता था। आज भी हस्तलिखित पाण्डुलिपिया प्रायशः इन्हीं स्थानों से आए दिन उपलब्ध होती रहती है।

संग्रहालय का अर्थ

आज हमारी प्राचीन सांस्कृतिक गतिविधियों के स्रोतो-आयुध उपकरण, आभूषण, वस्त्र, मूर्तियां, मुद्राओं, मुहरों आदि के साथ-साथ वर्तमान की आदिम जातियों के अतीत को प्रदर्शित करने वाली वेशभूषा, कृषि, पशु-पक्षी आदि से सम्बन्धित मूर्त तथ्यां के संग्रह स्थान को संग्रहालय कहा जाता है। आंग्ल भाषा में संग्रहालय हेतु (Museum) शब्द व्यवहृत होता है जिसके अर्थ एवं परिभाषाएँ विषय-वस्तु तथा परिवर्तित दृष्टिकोणों के कारण समय-समय पर परिवर्तनशील परिलक्षित होते है। Museum यूनानी शब्द Muses से निष्पत्र है जिसे यूनान में ज्ञान की देवी माना जाता था और Museum को उस देवी का मन्दिर। सम्भव है कि Museum की अवधारणा ज्ञान के केन्द्र के रूप में यूनानी परम्परा में इस देवी से सम्पृक्त कर अस्तित्ववान हुई रही हो ।

उक्त कथन की प्रामाणिकता एक यूनानी अनुश्रुति से सिद्ध हो जाती है जिसके अनुसार- "ओलम्पस पर्वत घाटी में पिता जियस Zeus (यूनानी देवाधिदेव) तथा माता नेमोसीन Mnemosyme (स्मृति की देवी) से नौ पुत्रियाँ का जन्म हुआ। इन्ही में एक

Muses थी जो अपने नृत्य एवं संगीत द्वारा जन-सामान्य के दुःख एवं निन्ता का निवारण करती थी। शेष आठों इतिहास, ऊर्ध्व पातन, मुन्त्र, ज्योतिष खगोल तथा महाकाव्यों आदि से सम्बन्धित थीं। कालान्तर में Museum के दोनां पक्षा-पवित्र मन्दिर तथा शिक्षण संस्थान के समन्वित स्वरूप को संग्रहालय कहा गया क्याकि इन स्थाना पर आकर मनुष्य थोड़ी देर के लिए ही सही, अभूतपूर्व सामग्रियों का दर्शन कर कौतूहल, विस्मय और आनन्द की सरिता मे अवगाहन कर अपने दु ख एवं चिन्ता को विस्मृत कर देता है।

उपर्युक्त आख्यान के गवेषणात्मक अनुशीलन से Museum से सम्बन्धित हमारे समक्ष दो बात उभरती है-

(i) प्रेरित करने वाला स्थान

(ii) मनुष्य को एकान्तिक भाव की अनुभूति कराने वाला स्थान

ज़िसमें वह जीवन की दैनन्दिन घटनाओं से छुटकारा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त करता है। Museum (संग्रहालय) शब्द की व्याख्या अधोलिखित प्रकार से करके उसके व्यापक अर्थ एवं वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट किया जा सकता है।

M- Man's मनुष्य का,

U- Utilization उपयोगिता

S- Sorrounding वातावरण

E- Exhibition प्रदर्शन

U- Under standing शैक्षणिक ज्ञान

M- Mankind

उक्त शब्द संक्षेप विवरण से Museum का जो अर्थभाव ध्वनित होता है उसके अनुसार- "संग्रहालय वह स्थान होता है जहाँ मानव की उपयोगिता की वस्तुओं का प्रदर्शन वातावरण के अनुरूप इस प्रकार किया जाता है जिससे शैक्षणिक ज्ञान प्राप्त हो सके। संग्रहालय की परिभाषाएँ अपने अर्थ की ही भाँति उद्देश्य वैविध्य एवं व्यापकता तथा दृष्टिकोण-परिवर्तनां के कारण संग्रहालय की परिभाषाओं में भी हमें भिन्नता परिलक्षित होती है। कुछ प्रमुख परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

डी० एफ० निकेलियस के अनुसार- "संग्रहालय अनुपलब्ध सामग्रियों का संग्रह स्थल हैं" । 'Museum is a chamber of rarities.'

नाथेन वेली के अनुसार- "संग्रहालय अध्ययन या पुस्तकालय है।" Museum is a study or library.

सर आशुतोष मुखर्जी के अनुसार- "संग्रहालय प्राकृतिक तत्त्वों तथा मानव क्रियाओं का संग्रह संस्थान है जिसका उपयोग ज्ञान के सम्वर्द्धन तथा जनता के सांस्कृतिक और बौद्धक विकास हेतु किया जाता हैं" । Museum is an institution for the preservation of hose objects which best illustrate the phenomena of nature and the works of man for the utilization of these in the increase of knowledge and for the culture and enlightenment of the people.

एडवर्ड फिलिप (युनिवर्सल इंग्लिश डिक्शनरी) के अनुसार- "संग्रहालय एक अध्ययन या ग्रन्थालय के साथ-साथ महाविद्यालय या जन-संस्थान है जहां विद्वान लोग मोरंजन हेतु एकत्रित होते है।"

एलमस बेटली (द म्युजियम, इट्स हिरस्ट्री एण्ड' टास्क ऑफ एजूकेशन) के अनुसार- "संग्रहालय उन विशेष वस्तुओ का सग्रह है जो किसी खास प्रकृति का हो तथा शिक्षा व मनोरंजन से सम्बन्धित हो अथवा इस प्रकार की सुविधाएं प्रदान कर सकता हो।"

इवरीमेन इनसाइक्लोपीडिया के अनुसार-"संग्रहालय उस इमारत का नाम है जहाँ के वैज्ञानिक प्राकृतिक, जिज्ञासाओं शैक्षिक एवं कलाओं की कृति संग्रहीत हो, जो जन समूह लाभ के लिए हो।

अमेरिकन संग्रहालय वैज्ञानिक एल० बी० कोलमैन के अनुसार- न कोई यूरोपियन इमारत है न बहुमंजिली स्थापत्य राष्ट्रीय सम्पत्ति, बल्कि एक अमेरिकन पद्धति है जी जनता की, जनता के लिए, जनता के द्वारा है।

डॉ० सेमुअल जानसान के अनुसार-"संग्रहालय विद्वतापूर्ण जिज्ञासाओं का संग्रह है।" कालान्तर में विद्वानों के जिज्ञासाओं के संग्रह को भी संग्रहालय के रूप में परिभाषित किया जाने लगा। इस विचारधारा के अनुसार-"सामान्यतः संग्रहालय वह संस्था है जिसे जन साधारण के लिए विशेष उद्देश्य से संग्रहीत किया गया है और उन संग्रहों का वैज्ञानिक पद्धति से प्रदर्शन किया गया है।"

यूनेस्को के अनुसार-"वह स्थान जहाँ पूर्ण विरासत संरक्षित एवं प्रदर्शित हो, ज्ञान की देवियों को सम्मानित हो एवं शोध तथा अनुसन्धान किया गया हो, संग्रहालय है। किन्तु आज का संग्रहालय एक रीति अथवा पद्धति है जिसके अन्तर्गत संस्कृति एवं शिक्षा, अनौपचारिक रूप से एक संस्था के रूप हो।"

उक्त परिभाषा को यूनेस्को ने अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में 14 दिसम्बर 1960 को इस प्रकार व्यापकत्व प्रदान किया- "Museum, shall be taken to mean, any permanent establishment administered, in the general interest for the purpose of preserving, studying, enhansing by various means and in particular exhibiting to the public for its delectation and instruction, groups, of objects and specimen of cultural value, artistic, historical scientific and technological collections, botanical, zoological gardens and aquarium."

उक्त परिभाषाओ के अतिरिक्त कतिपय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय संगठनों द्वारा भी परिभाषाएँ दी गई हैं जिनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं- अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद् द्वारा संग्राहलय को इस प्रकार परिभाषित किया गया है-एक अलाभ कर, स्थायी संस्था जो समाज की सेवा और इसके विकास में रत है, जो जनता के लिए खुली है जो प्राप्त करती है, ठीक प्रकार से रखती है, शोध करती है, जनता तक पहुँचाती है और प्रदर्शित करती है। शिक्षा के अध्ययन एवं आनन्द के लिए, मनुष्य और इसके वातावरण की बस्तु सामग्रियो को। "A non profit making, permanent institution, in the service of society and its development, and open to the public, which acquires, conserves, researches, communicates and exhibits, for the purpose of study, education and enjoyment, material evidence of man and his environment."

ब्रिटेन के संग्रहालय संगठन के अनुसार- "A Museum is an institution which collects, documents, preserves, exhibits and interprets materials evidence and associated information for the public benefit."

अमेरिकी संग्रहालय संगठन के अनुसार- A non profit permanent established, not existing primarily for the purpose of conducting temporary exhibitions, exempt from federal and state income taxes, open to the public and administered in the public interest, for the purpose of conserving and preserving, studying, interpreting, assembling and exhibiting to the public for its instruction and enjoyment objects and specimen of educational and cultural value, including artistic, scientific (wheather animate or inanimate), historical and technologic material. Museums thus defind shall include botnical gardens, zoological parks, aquiria, planetaria, historical societies and historic houses and sites which meet the requirements set forth in the preceding sentence."

कालान्तर में उक्त परिभाषाओं में कतिपय अन्य बातों का भी समावेश किया गया जिसके लिए SMART शब्द-संक्षेप का व्यवहार किया गया| इसकी व्याख्या इस प्रकार है-

S-Simple
M-Measurable
A-Achievable
R-Result oriented
T-Time bound

उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन से यह बात उभरकर सामने आती है कि संग्रहालय को परिभाषित करने दाली कोई एक सर्वमान्य परिभाषा का सर्वथा अभाव है इक्कीसवीं शताब्दी में संग्रहालय शारित्रयों को इसे एक चुनौत्ती के रूप में लेना होगा। दरअसल इतनी सारी परिभाषाओ के होने के पीछे निम्न तीन कारक उत्तरदायी प्रतीत होते है-

(i) संग्रहालय के प्रकार एवं उद्देश्यों में विविधता
(ii) संग्रहालय विदों के मध्य मतभेद एवं. विचारधाराओं में निरन्तर परिवर्तन
(iii) जन-साधारण के निजी अनुभव एवं बोध

चूंकि आज किसी भी वस्तु, विषय,स्थल अथवा समाज को आधार बनाकर संगहालय बनाए जा रहे हैं फलतः उनके आकार, विधान, प्रबन्ध एवं उद्देश्यों में विविधता आनी स्वाभाविक है ऐसी स्थिति में संग्रहालय को किसी एक परिभाषा में आबद्ध करना जटिल कार्य है। एक ओर जहां हम संग्रहालय को सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्था के रूप में स्वीकार करते हैं वहीं दूसरी ओर इसे प्राचीन, दुर्लभ, लुप्त अथवा कीमती वस्तुओं के रखने के स्थान के रूप में देखा जाता है। कतिपय संग्रहालय विद् संग्रहालयकों किसी राष्ट्र, प्रान्त या स्थान की सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक सम्पदा के संरक्षण एवं स्थल के रूप में प्रस्तावित करते संग्रहालयविदा का एक वर्ग इसे दर्पण मानता है जिसमें वे अपनी संस्कृति, इतिहास और पर्यावरण का स्वरूप देखते है। ऐसा वर्ग संग्रहालयों को एक ऐसे मंच के रूप में सोचने लगा है जहाँ अभिनव विचारधाराओं को जन्म लेने विकसित होने और उनके आदान-प्रदान के अवसर प्राप्त होते हैं। जनसाधारण भी अपने निजी अनुभवा के आधार पर संग्रहालय की परिभाषा करता है

क्योंकि शिक्षित वर्ग भी संग्रहालय को प्राचीन, दुर्लभ, असामान्य, अप्रचलित ऐतिहासिक अथवा लुप्त वस्तुआ के रखने की जगह मानता है न कि एक शिक्षा-स्थल के रूप में।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आलोक में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि विशेष लक्ष्य के लिए विशिष्ट वस्तुओं का संग्रह और प्रदर्शन जिससे अनौपचारिक शिक्षा का बोध हो संग्रहालय कहा जायेगा जो एक स्थायी संस्था होती है तथा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक कलात्मक, वैज्ञानिक महत्व की वस्तुआं के संग्रह, शोध, पंजीकरण, संरक्षण एवं प्रदर्शन द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों को ज्ञान शिक्षा एवं आनन्द प्रदान करने का माध्यम होती है। यह एक ऐसी शैक्षिक संस्था है जहाँ कोई परीक्षा नहीं है न ही कोई पाठ्यक्रम। न कक्षा के लिए किसी घण्टी की व्यवस्था है न ही अध्यापक का डर। यहां सीखना आकर्षक खेल व आनन्द के रूप में है। कला वस्तुओं का प्रदर्शन ही सीखने की भाषा है जो प्रत्यक्षतः जन-मानस को प्रभावित करता है।

मनुष्य स्वभावतः अन्वेषी एवं संचयी होता है। विकासात्मक अन्वेषण क्रम में जब उसे कोई आकर्षक, कौतुहलवर्द्धक उपयोगी वस्तु प्राप्त होती है तो वह उसका संचय करता है। इसके द्वारा किया गया यही संचय जब सुरक्षित रूप में निश्चित स्थान पर होता है तब उसे 'संग्रह कहा जाता है तदनन्तर जब संग्रहीत वस्तु एकक्र भाव से निश्चित क्रमबद्धता में जन सामान्य को जानकारी देने, देखने, अध्ययन एवं खोज हेतु व्यवस्थित रूप से सजायी जाती है तो वह स्थान 'संग्रहालय" कहा जाता है तथा इसके विधिवत् संग्रहण विधि को संग्रहालय विधि Museology कहा जाता है।

संग्रहालय : एक अध्ययन विषय के रूप में

संग्रहालय की प्रतिस्थापना एक स्वतन्त्र अध्ययन के विषय के रूप में कब हुई, अनिश्चित तथ्य है। संग्रहालयों के इतिहास एवं विकास के अध्ययन से अधोलिखित दो बातें स्पष्टतया हमारे समक्ष उभरती हैं-

(i) संग्रहालय का उदय पहले हुआ, संग्रहालय शास्त्र बाद में ।

(ii) संग्रहालयीय कार्यों से संग्रहालय शास्त्र का उदय हुआ ।

संग्रहालयो की स्थापना में ज्यो-ज्यों उद्देश्यों की व्यापकता का समावेश होता गया त्यों- त्यो संग्रहालयों के कार्य व्यापार के तौर-तरीके भी परिवर्तित होते रहे क्याकि संग्रहालया की स्थापना के प्रारम्भिक चरणों में हमें उनके कार्य-कलापो हेतु किसी सुनिश्चित कानून-कायदां के होने के प्रमाण नहीं मिलते है। हाँ, संग्रहालयों की व्यवस्था तदजन्य परिस्थितियां से प्राप्त अनुभवो, तात्कालिक उद्देश्यो एवं सुविधाओं द्वारा ही संचालित होती थी।

यद्यपि संग्रहालय आन्दोलन के इतिहास एवं विकास की झलक प्रस्तुत करने वाले समकालीन साहित्य के अनुशीलन से हमें संग्रहालयीय कार्यों एवं उनके सम्पन्न करने वाले तौर-तरीको से सम्बन्धित अनेकों उल्लेख तो प्राप्त होते हैं तथापि यह सुनिश्चित करना टेढ़ी खीर है कि सर्वप्रथम 'संग्रहालय शास्त्र का प्रयोग कहाँ और किसने किया? संग्रहालय से सम्बन्धित धारणाओं एवं अभ्यास कस्ने वाला को 'म्युजियो ग्राफिस्ट' जैसे शब्द से अभिहित किया जाता था। संप्रहालय के इतिहास एवं विकास के दगुदर्शक उल्लेखों पर यदि पर्याप्त ध्यान दें तो प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष यह उत्तर परत-दर-परत प्राप्त होता जाता है कि किस प्रकार

संग्रहालयीय कार्यों एवं उन्हें निष्पादित करने के तौर-तरीको का विकास हुआ और फिर कालान्तर में इन्हें सिद्धान्तों के रूप मे परिवर्तित किया गया और फिर संग्रहालय एक शास्त्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

सन् 1617-21 के मध्य ग्युलियोमानसिनीकृत considerazionisulla pittura पहला साहित्यिक प्रन्थ है जिसमें वह उल्लेख करता है कि कैसे संग्रहकत्ताओं को चित्रों को लगाते समय प्रकाश तथा विषयानुसार चित्रो को लटकाने हेतु कक्षा का चयन करना चाहिए। साथ ही ऐसे लोगों के निमित्त उसका निर्देश भी है कि चित्रा को इस प्रकार लगाया जाय जिससे दर्शकों को उन्हें देखने और देखने पर आनन्द प्राप्ति में कोई व्यवधान न आए। उसके अनुसार- कामुक चित्रों को निजी एवं धार्मिक नित्रों को शयन कक्ष में लगाया जाना चाहिए। 1624 में हेनरीवाटनकृत Elements of Architecture में उल्लेख मिलता है कि एक कक्ष में अधिक चित्र न लगाए जाए और न ही कमरे में दोनों ओर खिड़कियाँ लगाई जाएँ। क्योंकि इससे क्रमशः चित्रों की भोड़ जमा हो जाएगी तथा क्रास लाइटिंग से प्रकाश की आदर्श स्थिति नही बन पाएगी।" इसके अनुसार अलग-अलग विषयां के चित्रों को अलग-अलग कक्षों में लगाया जाना चाहिए। 1658 में विलियम सेण्डरसनकृत Graphice में चित्रों को लगाने सम्बन्धी निर्देश प्राप्त होते हैं कि नित्रा को आगे को और किचित झुका कर लगाया जाना चाहिए। 1857 में प्रणीत The Hanging of Pictures में जान रस्किन का कथन है कि एक आदर्श गैलरी में बड़े चित्रा को एक पंक्ति में तथा छोटे नचित्रा को दो पंक्तिया में तथा दो के मध्य कुछ स्थान छोड़कर प्रदर्शित किया जाना चाहिए जिससे एक चित्र के रंग दूसरे चित्रों के रंगो मे व्यवधान न पैदाकर सकें। उसके अनुसार एक चित्रकार के चित्रों को एक साथ रखे जाने चाहिए क्योंकि विभिन्न चित्रकारों की कृतियों की प्रतिकूलता नचित्रों के गुणों को उभारने के बजाय उनके दोषों को उभार देती है।

1727 में संग्रहालय विषयक अत्यन्त मौलिक सिद्धान्तों वाली कृति Museographia का प्रकाशन हुआ जिसका प्रणयन सी० एफ० निकेलियस द्वारा किया गया इसमें प्रदर्शों के निमित्त निर्मित होनेवाले कक्ष की माप, फर्नीचर तथा रंग आदि के चयन की विस्तार से चर्चा की गई है। वस्तुओं के संग्रह, परिरक्षण, वर्गीकरण तथा प्रदर्शन हेतु कैबिनेट आदि से सम्बन्धित सुझाव भी उसने दिए है। सोलहवीं शती ई० से चित्रों के संरक्षण विधियों पर प्रकाश पड़ने आरम्भ हो जाते हैं। सत्रहवीं शती ई० में कैनवास नित्रों के खराब हो जाने पर उन्हें पुनः पीछे से कैनवास नचिपका कर सुरक्षित किया जाने लगा। आगे चलकर 18वीं शती ई० में चित्रों को पुराने कैनवास से नए कैनवास पर उतारने की तकनीक का विकास हुआ।

संग्रहालय शास्त्र सम्बन्धी विभिन्न अवधारणाओं के विकास एवं सिद्धान्तो मे स्पष्टता के समावेशन के लिए बीसवीं सदी का योगदांन अविस्मरणीय रहेगा। अब संग्रहालय शास्त्र के निमित्त प्रबन्धन, संरक्षण, प्रदर्शन, शिक्षा तथा शोध जैसे विषयों पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर विचार विनिमय सम्भव हुआ, फलस्वरूप विभिन्न संग्रहालय संगठनों के सदस्य देशों के मध्य संग्रहालय शासत्र विषयक प्रकाशन हुए और उनका पारस्परिक आदान-प्रदान भी सम्भव हुआ। इसके साथ सम्बद्ध देशों के संग्रहापालों (क्युरेटर्स) के प्रशिक्षण

कार्यक्रमों के भी आयोजन होने लगे। यूनेस्को ने 1958 संग्रहालय शास्त्र के निमित्त इस परिभाषा का पहली बार प्रयोग किया- -

Museology is the branch of knowledge concerned with the study of purposes and organization of museums. Muscography is the body of techniques related to museology.

1972 में अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद ICOM ने संग्रहालय शास्त्र को परिभाषित करते हुए संग्रहालयों के उद्देश्य, व्यवस्था, इतिहास एवं विकास के अध्ययन, संग्रहालय वर्गीकरण शोध अनुसन्धान के विशिष्ट तौर-तरीकों आदि को समावेष्टित किया है-

Museology is Museum Science-It has to do with the study of the history and back ground of museum, their role in society, specific system for research, relationship with the physical environment and the classification of different kinds of museums. In brief, museology is the branch of knowledge concerned with the study of the purposes and organization of museums.

Museography is the study of techniques relatéd to museology. It covers methods and practices in the operation of museums, in all their-various aspects.

इस प्रकार हम देखते हैं कि संग्रहालय शास्त्र संग्रहालयीय कार्यो के सिद्धान्तों एवं यवहार से सम्बन्धित माना गया तथा एक स्वतन्त्र अध्ययन विषय के रूप में इसे मान्यता प्रदान की गई और विभिन्न विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया। संग्रहालयीय सद्धान्ता के विकास में शिक्षा, मनोविज्ञान, प्रबन्ध शास्त्र भौतिक एवं रसायन शास्त्रों के यागदान के परिणामस्वरूप इसकी अन्तर्विषयी स्वरुप भी अस्तित्व में आया। कालान्तर में संग्रहालय शास्त्र को सामान्य और विशिष्ट प्रकारों में विभाजित करने की अवधारणा ने जन्म या इस विभाजन का आधार उसका अन्तर्विषयी स्वरूप और कार्य पद्धति स्वीकार किए गए। इस विभाजन का श्रेय चेकोस्लोवाकिया के संग्रहालय शास्त्री जिरी न्यूसट्पिनी Jiri Neustupny को प्रदान किया जाता है। उनके अनुसार "सामान्य संग्रहालय शास्त्र का आशय ऐसे संग्रहालीय कार्यपद्धति से है जो साधारण तथा ज्ञान के अन्य क्षेत्रों यथा प्राकृतिक, सामाजिक एवं तकनीकी विज्ञानों से सम्बन्धित है जो आधुनिक संग्रहालयों का प्रतिनिधित्व General museology is a theory and methodology of museum work which is commonly shared by all areas of knowledge such as natural, social or techaical science as represented in present day museums.' उनके अनुसार - संग्रहालयीय कार्यों में विविध समुच्चयों के सिद्धान्तों एवं पद्धतियों का व्यवहार है।

'Specialized museology is the theory and methodology of the application of various disciplines in museum work.'

नव संग्रहालय शास्त्र

प्रारम्भ में संग्रहालयों का उद्देश्य सीमित समाज के कतिपय इने-गिने वर्ग हेतु शोध, उनके रहन-सहन अथवा उसकी कलाओं से सम्बन्धित था इन्हीं की प्राप्ति हेतु संग्रहालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण सचेष्ट रहते थे संग्रहालय के यह उद्देश्य रूढ़िवादी माने जाते है। आधुनिक संग्रहालयविद संग्रहालय के उक्त उद्देश्या से असहमेत प्रतीत होते हैं। उनके अनुसार- "एक संग्रहालय आम जनता के लिए, जनता के द्वारा एवं जनता की धरोहर व रख-रखाव की सम्पत्ति है जिससे आम जनता अपनी कला संस्कृति, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं

प्रत्येक प्रकार की कलाकृतियों, उत्कृष्ट धरौहर, हमारे विकास एवं उपलब्धियों का आकलन कर सके।" ए० एस० विटलिन का अभिमत है कि 'जनसंग्रहालय एक जनसंस्था है, इनका आकलन संग्रहालयों में आए दर्शकों द्वारा ही स्थायी या अस्थायी प्रदर्शनी के माध्यम से हो सकता है। अतः दर्शक संग्रहालय के मेरुदण्ड हैं इसलिए आज एक कला दीर्घा अधवा आधुनिक संग्रहालय को समस्त जनजीवन तथा जनसाधारण के दर्शकों के आने की अपेक्षा करनी चाहिए चाहे वे प्रामीण हों, अनपढ़ हों, विदेशी हों, धनाढ्य हों या अपग हा, सग्रहालय सभी वर्ग के दर्शकों हेतु खुला होना चाहिए।"नवसंग्रहालय शासख्र इसी अभिनव अवधारणा की उपज है। इस अवधारणा के अनुसार- "संग्रहालय समाज के प्रत्येक वर्ग-साधारण से विशिष्ट, धनी से निर्धन, नौकर से शाही वर्ग सभी के लिए एक अनौपचारिक पाठशाला है। संग्रहालय के संग्रहण, प्रदर्शन, अभिव्यक्ति एवं प्रसार सभी कुछ जनता के लिए और आम जनता की सन्तृष्टि का आज संग्रहालय के उद्देश्य हैं।" अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद के पुर्व निदेशक Hugcs-de-varine ने नवसंग्रहालय शास्त्र को कुछ इस प्रकार परिभाषित किया है- I do not think how museology is a sect or now religion, I think it is a movement which is rooted deeply in the 70's and 80's of this century. I think it is not some thing for every body. It is only for the people who are convinced, who are volunteers to take part. But it is something to build because the practice is very difficult-you have no models.

1998 में सालार जंग संग्रहालय हैदराबाद में 'concept of new museology and challenges of 21st century' विषयक आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में डॉ अनुपमा भटनागर ने नव संग्रहालय को इस प्रकार परिभाषित किया है-

New museology is not a new science but a movement with in the science of museology. Museology itself is an applied science and new mùseology being a recent development with in the fold of museology prescribes new ideas, develop new forms of museums and fresh approach to deal with the new problems and challenges arising out of modern development based on science and technology.

नव संग्रहालयवाद परम्परागत संग्रहालयां के अस्तित्व को चुनौती नहीं देता है वरन् नए प्रकार के संग्रहालयों की स्थापना, क्षेत्रीय नागरिकों समुदायों को उनकी सांस्कृतिक एवं सामाजिक, आर्थिक आवश्यकताओं की पहचान तथा उनके विकास की योजनाओं से परिचित कराता है-

New museology provides fresh concepts develops new types of museums and helps the members of a local community to identify their socio-economic and cultural needs and plan their own development without the dictates or interfercnces from outside. नव संग्रहालय शास्त्र की अवधारणा में संग्रहालय के अधीक्षक का उत्तरदायित्व है कि पहाड़ी अथवा आदिवासी क्षेत्र में यदि वह कार्य कर रहा है तो उसे श्षेत्र विशेष के सन्दर्भ में कलाकृतियाँ का प्रदर्शन अवश्य करना चाहिए ताकि उनके निर्माता लोगों को शेष जगत से तथा शेष जगत् को इनसे एवं इनकी संस्कृति से सम्बन्धित किया जा सके। इसी उद्देश्य से नई प्रकार के संग्रहालयां- ईको म्युजियम एवं कम्युनिटी म्युजियम का विकास इस अवधारणा के अन्तर्गत हुआ। नव संग्रहालय में छोटे स्तर पर आदिवासी संस्कृति

को शोध एवं अध्ययन हेतु चुना जाता है ताकि उनको सम्पूर्ण सांस्कृतिक पक्षी को उजागर किया जा सके-

New museology based on inter discipalinary approach considers equally all the products of humanity-be the artistic religious, technological, domestic or linguistic-as integral componant of a culture together being a coherent statemnt of the relationship within a community and of a community with the environment, Thus, the new meseology takes a holistic view of culture.

स्व० पं० नेहरु के विचार भी आंशिक रूप से नव संग्रहालय के इर्द-गिर्द प्रतीत होते 'संग्रहालय मात्र अजायब घर या विशेष अटपटे चीजा का स्थल नहीं अपितु वे राष्ट्र के कलाकृतिक धरोहर, सांस्कृतिक विरासत एवं अनौपचारिक शिक्षा प्रणाली का माध्यम हैं। इन अर्थों में उन्होंने शहरों में ही नहीं अपितु गाँवा तथा कस्बो में संग्रहालयों की स्थापना का आवश्यकता को महसूस किया। नव संग्रहालय के अन्तर्गत संग्रहालयां का उद्देश्य निम्नतम् स्तर पर संस्कृति के यथोचित प्रसार एवं उनकी अभिव्यक्ति से लेकर उच्च वर्गीय लोगों के लिए समान रूप से उत्तरदायी हैं। कला, हस्तकला, नृत्य, नाटक, संगीत, साहित्य, विज्ञान स्भी के प्रति उत्तरदायित्व का बोध हो, संग्रहालयीय गतिविधियों की जानकारी प्रदर्शनी, प्रतचार- प्रसार के माध्यम से किया जाना चाहिए ताकि जनता को विश्वास हो कि संग्रहालय इन कार्यो के प्रति उत्तरदायी ढंग से कार्य कर रहे हैं।

New museology means the applied of muscology that is how museum can play avital role in a society for its socio-cultural development.

इस प्रकार इस अवधारणा के अनुसार- संग्रहालय जनता के लिए, जनता के द्वारा, जनता की ही धरोहर है तथा जनता के लिए उत्तरदायी है। संग्रहालय के कर्मचारी एवं अधिकारीगण जनता के सेवक हैं एवं जनता के लिए हैं न कि वर्ग विशेष के लिए।